IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 2, Issue 1, September 2022

Impact Factor: 6.252

Hkkjrh; Kku&ijEijk esa Hkksx o R;kx dk leUo;

Mk- dqlqe flag

Senior Auditor, District Audit Office, Cooperative Society & Panchayten, Ghaziabad

Lkkjka'k

भारतीय ज्ञान–परम्परा अद्वितीय ज्ञान व प्रज्ञा का प्रतीक है जिसमें ज्ञान व विज्ञान, लौकिक व पारलौकिक, कर्म एवं धर्म और भोग व त्याग का अद्भुत् समन्वय है। त्याग और भोग का समन्वय ही वर्तमान युग की घोषणा है और यही इस युग की समस्या भी है। जगत् के भीतर बहुत से मनुष्य भोग करते–करते जीवन की इहलीला को समाप्त कर देते हैं वे पार्थिव भोग करते हैं यह भोग स्पष्ट उनके मन को, विचारों को उनकी बुद्धि को भौतिक वस्तुओं से ऊपर नहीं उठने देते। मनुष्य केवल इन्द्रियों का समूह नहीं है बल्कि वह वास्तव में इन्द्रियातीत है। इसी कारण पंचेन्द्रियो द्वारा जगत् के भोगों का निरन्तर उपभोग करते रहने पर भी इन्द्रियातीत आत्मा तृप्त नहीं होती। भौतिक पदार्थों के भोग से स्वभावतः एक प्रकार की थकावट आ जाती है किन्तु भोग की स्पृहा को अस्वीकार करना भी भूल है। इसलिए भोग भी ज्ञानपूर्वक करना चाहिए। उसके साथ ऐसी चीज भी रखनी चाहिए जिससे भोग में डूबा न जा सके यही त्याग है।

Figure : 00	References : 10	Table : 00

eq[; 'kCn& yhyk] vukIfDr] vkuUn] ;Drkgkj fogkj] vkIfä] yhyk] lgpj